AMOGHVARTA

ISSN : 2583-3189

स्वतंत्रता से पूर्व भारतीय अर्थव्यवस्था पर घातक – ब्रिटिश शासन

ORIGINAL ARTICLE

Author

डॉ. संजीव कुमार,

असिस्टेंट प्रोफेसर अर्थशास्त्र विभाग

डॉ भीमराव अंबेडकर तराई किसान महाविद्यालय

लालपुर, निघासन खीरी,

लखीमपुर, उत्तरप्रदेश, भारत

शोध सार

भारत आदिकाल से ही प्राकृतिक संपदा संपन्न राष्ट्र रहा है यहां अनेक विद्वानों ने समय–समय पर जन्म लिया और दुनिया को अपना लोहा मानने के लिए विवश कर दिया। प्राचीन काल में अनेक शासकों ने भारत पर आक्रमण करके भारत को आर्थिक एवं व्यापारिक क्षेत्र में क्षति पहुंचाई इसी क्षेत्र में एक क्रम चलता रहा जो भी विदेशी शासक अपने यहां आया उसने यहां लूटपाट की और यहां से लूटा हुआ धन देकर अपने देश में चला गया। भारत को सोने की चिड़िया कहा जाता था। इसी क्रम में अंग्रेज भारत आए उन्होंने पहले तो यहां व्यापार करने के लिए अपनी कंपनियां लगाई। धीरे–धीरे व्यापार करते–करते उन्होंने यहां पर फूट डालो राज करो की नीति अपनाकर भारत पर कब्जा कर लिया। यहां से कच्चा माल ले जाकर वह इंग्लैंड से पका हुआ माल बनाते हैं, जिसे ऊंचे दामों पर बेचते थे यही क्रम चलता रहा। प्राकृतिक संपदा और धन–धान्य से संपन्न भारत आज अविकसित हो गया अब क्योंकि स्वतंत्रता के बाद हमारे देश में अपनी सरकार है, अपने नियम हैं लेकिन हम उन नियमों से कहां विकसित अवस्था में पहुंच पाएंगे क्योंकि साधन संपन्नता हमारे पास बहुत ही कम है। सरकार नए कार्यों से भारत को विश्व में स्थान दिलाने के प्रथम स्थान दिलाने के लिए प्रयासरत् है। भारत की अर्थव्यवस्था धीरे–धीरे बढ़ोतरी कर रही है, उन्नति की ओर अग्रसर है। अब देखना यह होगा कि क्या हम अपने मकसद में कामयाब हो पाएंगे।

मुख्य शब्द

स्वतंत्रता, ब्रिटिश शासन, दादा भाई नौरोजी, अर्थव्यवस्था, ग्रामीण.

प्रस्तावना

संसार का काल चक्र सतत् बेरोकटोक चलता रहता है यह सृष्टि का एक नियम है लेकिन एक आवश्यक तथ्य है कि समय सबके लिए समान नहीं रहता, इसलिए चाहे व्यक्ति हो या राष्ट्र सभी के जीवन की दशाओं में परिवर्तन होता रहता है। समय का ही परिणाम है कि विश्व का संपूर्ण इतिहास अनेक राज्यों के उत्थान एवं पतन से भरा पड़ा है। कितने ही सशक्त साम्राज्य का उत्थान एवं विकास हुआ है। तथा बहुत से कमजोर साम्राज्य का उत्थान एवं विकास हुआ अर्थात् सशक्त एवं समृद्धि से कमजोर एवं निर्धन हुए। विश्व के बहुत से राष्ट्र गरीब तथा गुलाम थे किंतु आज संप्रभुता संपन्न हो गए हैं। कुछ ऐसे भी राज्य हैं जो दूसरे राष्ट्रों पर अधिपत्य एवं शासन कर रहे थे, आज वह भी अपने अधीन शासित राष्ट्रों के इशारे पर चल रहे हैं। अतः प्राचीन समय में विदेशी व्यक्तियों

ने भारत पर आक्रमण किया, राजकीय एवं देश की अमूल्य संपत्ति को लूट कर अपने राष्ट्र को ले गए। यहां से कच्चा माल ले जाकर वहां से तैयार माल को लाकर दोबारा भारत में उसे ऊंचे दामों पर बेचा करते थे, इसलिए यह लोग बहुत जल्दी मालामाल हो गए और यहां की जनता का शोषण करते रहे। इस परिवर्तन के लिए भारत मे अनेक आंदोलन हुए।

भारतीय अर्थव्यवस्था मूल रूप से ग्रामीण विकास पर ही आधारित है। भारतीय अर्थव्यवस्था का आधारभूत विकास की अवधारणा ग्रामीण विकास के निकट है। ग्रामीण भारत सदैव से निर्धन पिछड़ा रहा, उसके साथ इसका गौरवशाली अतीत है, इसकी समृद्धि इसकी सोच का कारण बनी।

अध्ययन की आवश्यकता

भारत में प्राचीन समय से ही अनेक प्रकार की प्राकृतिक सामग्री एवं खनिज अधिक मात्रा में पाए जाते थे यहां के लोग प्राकृतिक साधनों का सही प्रकार से दोहन नहीं कर पाते थे। अनेक साम्राज्य आए, उन्होंने अपने हिसाब से भारत को लूटा और उसकी संपत्ति को ले गए। लेकिन सबसे अधिक नुकसान ब्रिटिश शासन ने किया। उसके किए गए कार्यों का अध्ययन करना इसलिए आवश्यक है क्योंकि यह हम लोगों से प्रत्यक्ष रूप से जुड़ा हुआ है।

अध्ययन की विधियां

ब्रिटिश शासन ने भारतीय अर्थव्यवस्था को बुरी तरह से झकझोर दिया। इस बात का अध्ययन हम स्वतंत्रता से पूर्व तथा स्वतंत्रता के पश्चात की व्यवस्थाओं का तुलनात्मक अध्ययन के रूप में करेंगे और इससे जो निष्कर्ष निकलेगा उसका हम परीक्षण करेंगे।

ब्रिटिश शासन से पूर्व भारतीय अर्थव्यवस्था

ब्रिटिश शासन से पूर्व अनेक पर्यटको ने भारत का भ्रमण किया और यहां की अर्थव्यवस्था का अध्ययन किया। अपने अध्ययन से उन्होंने निष्कर्ष में लिखा कि उन दिनों गांव में भी लोग आमतौर पर समृद्ध थे जबकि ब्रिटिश शासन के दौरान स्थित बदल गई। 70 फ़ीसदी लोग आत्मनिर्भर न होकर इस समय की परिस्थितियों के आगे नतमस्तक हो गए। एक पर्यटक ने टिप्पणी की कि छोटे से छोटे गांव में चॉवल, दूध, मक्खन, सब्जियां, चीनी तथा मिठाइयां प्रचुर मात्रा में प्राप्त की जा सकती थी। इससे स्पष्ट होता है कि ब्रिटिश शासन से पूर्व भारत समृद्ध था। समाज में पर्याप्त एवं प्रमाणिक साहित्य की उपलब्धता के संबंध में भेद है लेकिन इस संबंध में सामग्री का मुख्य स्रोत लेखन हैं। भारत का आर्थिक इतिहास फ्रांसिस बुकानन की डायरी दादा भाई नौरोजी का लेख तथा इकाइयों का प्रतिवेदन है।

ब्रिटिश भारत की नीति का प्रभाव

ब्रिटिश शासन में भारत के आर्थिक एवं सामाजिक ढांचे को प्रभाव डाला उस समय का समाज कृषि एवं उद्योग संबंधी घरेलू एकता पर आधारित था। ग्रामीण अर्थव्यवस्था लघु एवं कुटीर उद्योग पर आधारित थी, लेकिन अंग्रेजों ने व्यापार के लिए ऐसी नीति बनाई जिसके कारण लोगों के लोगों में असंतोष उत्पन्न हो गया। एक–दूसरे के साथ लड़ाई–झगड़े करने लगे, अंग्रेजी यही चाहते थे कि लोगों में आपस में फूट पड़े और फूट का फायदा उठाकर हम अपने साम्राज्य को और ज्यादा समृद्धि एवं विकसित करें। इसी के परिणाम से ब्रिटेन में क्रांति हुई। एशिया की इस क्रांति न केवल पुराने दौर की गांव की परंपरा को नष्ट नहीं किया, बल्कि एक नई परंपरा विकसित कर दी। इस कांति ने पुराने उद्योगों को नष्ट कर डाला और उनमें रहने वालों लोगो को गांव में रहने के लिए मजबूर कर दिया जिससे गांव के आर्थिक जीवन का संतुलन बिगड़ गया। ब्रिटिश सरकार की नीतियां इतनी गलत थी कि भारतवासी सिर्फ अपना शोषण करवाने लगे। किसी भी सरकार के द्वारा जो नीति बनाई जाती है वह दो प्रकार की होती है सकारात्मक और नकारात्मक।

यह निर्विवाद सत्य है कि अपार प्राकृतिक संपदा भारत में मौजूद है परंतु भारत को विकसित राष्ट्र का दर्जा नही मिला। यह बहुत सीमा तक संसाधनों का उपयोग न करने के कारण है। एम एन राय और डीआर गाडगिल

आदि विद्वानों ने माना है कि यदि साम्राज्यवाद ना होता तो समय के साथ यहां भी पूंजीवादी अर्थव्यवस्था का विकास होता क्योंकि देश में जिस समय पूंजीवादी अर्थव्यवस्था का विकास हो रहा था ठीक उसी समय साम्राज्यवाद ने पदार्पण किया था। यद्यपि उस समय विकास के मार्ग में अवरोध उत्पन्न करने वाली अनेक बाधाएं थी जैसे साम्राज्यवादी नीतियों व राज्य के द्वारा शोषण भू स्वामित्व प्रणाली से कृषि में गतिहीनता, व्यापारिक औद्योगिक एवं महाग्यनी पूंजी के माध्यम से शोषण और संपत्ति का विकास आदि के द्वारा भारतीय अर्थव्यवस्था को अल्प विकास एवं गति हीनता की अवस्था में बनाए रखा।

निष्कर्ष

इस प्रकार सभी पहलुओं के विश्लेषण से स्पष्ट हो जाता है कि अंग्रेजी शासन से पूर्व भारतीय अर्थव्यवस्था की दशा सभी क्षेत्रों में काफी अच्छी थी। इस बात की पुष्टि वेनिस निवासी मनूची जो लगभग 40 वर्षों तक औरंगजेब का मुख्य चिकित्सक था ने भारत के अलग–अलग प्रांतों का भ्रमण करने के बाद की है। मनूचि के अनुसार मुगल शासकों के सभी राज्यों में से बंगाल प्रांत सर्वाधिक मशहूर था। बंगाल की अत्यधिक निर्भरता का प्रमाण उसकी अपूर्ण संपदा है जो वहां से यूरोप भेजी जाती थी। चीनी, सिल्क, कपास और नील के उत्पादन में यह मिस्र से भी आगे बढ़ा। यहां अनाज, फल, मलमल, जरी का, रेशम के कपड़े भरे पड़े थे।

वर्तमान में देश के प्रधानमंत्री माननीय मोदी जी अपने देश के लिए अनेक योजनाएं बना रहे हैं, उनका क्रियान्वयन करवा रहे हैं और इस बात का भी ध्यान रखे हुए हैं कि कहीं भी इसी प्रकार की कोई भ्रष्टाचार जैसी समस्या न आए। आज हमारी गिनती विश्व के अग्रणी देशों में होती है। अन्य देशो के साथ हमारा विदेशी व्यापार सफलतापूर्वक चल रहा है और चलता रहेगा। आयाम प्राप्त करने के लिए भारतीय अर्थव्यवस्था प्रयासरत् हैं और ऐसी आशा है कि आने वाले समय में भारतीय अर्थव्यवस्था विश्व की नंबर वन की अर्थव्यवस्था होगी।

संदर्भ सूची

1. भारतीय अर्थव्यवस्था ––मिश्रा एवं पूरी
2. पावर्टी ऑफ इंडिया ––दादाभाई नरोजी
3. भारत की विभिन्न पंचवर्षीय योजनाओं का अध्ययन
4. आर्थिक विकास एवं नियोजन ––– डॉ.बी सी सिन्हा
5. आर्थिक नियोजन एवं विकास––डॉ रीता माथुर
6. वित्त मंत्रालय की रिपोर्ट
7. योजना मासिक पत्रिका
8. कुरुक्षेत्र मासिक पत्रिका

––==00==––